ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-2 अंक : 1 सहयोग शुल्क : रु.1 जनवरी 2018

दिव्यांग सेतु

संपादक : - **संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई**

‘निराशावाद कमजोरी की ओर जाता है, और आशावाद शक्ति की ओर ले जाता है|’

-नरेन्द्र मोदी

‘कर्म करते रहें और फल की अपेक्षा भी रखें, क्योंकि मंजिल स्पष्ट नहीं होंगी तो दौड़ लगाने का कोई अर्थ नहीं है|’

-संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है|
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा|
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है|
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

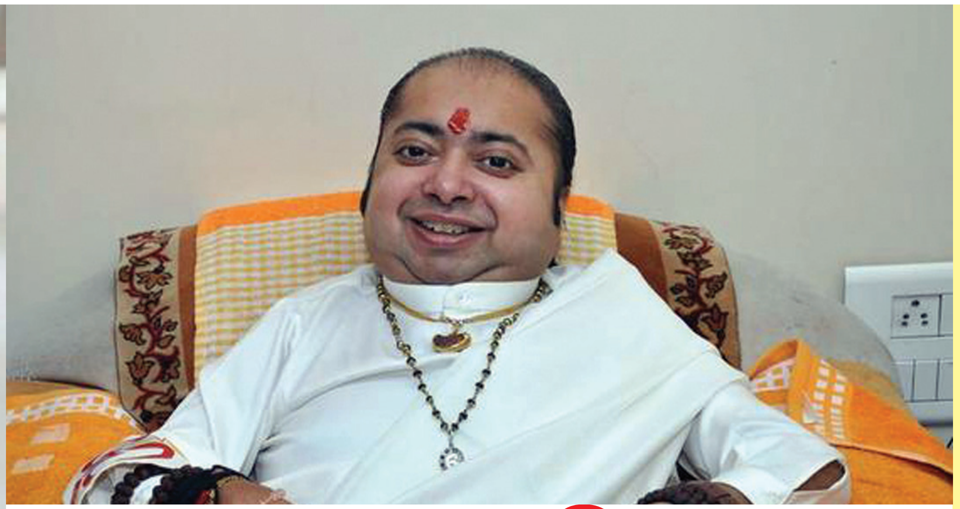

संपादकीय

दोस्तों,

नए साल कि शुरुआत हो चुकी है| आसमान में नए रंगों की बहार खिली है| पूर्व की ओर से आशाओं का उद्भव हो रहा है और पश्चिम कि तरफ उसका अंत| रोज हम उठते है नए सपनों के साथ और सोते ही इश्वर उसको भूला देता है| जैसे ही हम उठतें है, फिर से मानो प्राणसंचार हुआ हो ऐसे नवपल्लवित पुष्प कि तरह खिल उठते है| नव वर्ष का आगमन नई उमंग के साथ ही एक नई ऊर्जा का भी संचार तो करता ही है, कुछ नया और अच्छा होने की आस भी जगाता है। यह आस तब उत्साह में बदलती है जब विभिन्न चुनौतियों से पार पाना आसान दिखने लगता है। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता और न ही किसी को करना चाहिए कि काल चक्र में परिवर्तन के बाद भी देश अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ये चुनौतियां सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ अन्य अनेक क्षेत्रों में भी हैं। जब यह कहा जाता है कि नए भारत में जातिवाद-संप्रदायवाद और आतंकवाद जैसी समस्याओं से देश को मुक्ति मिले तो एक तरह से चुनौतियों को ही रेखांकित किया जाता है। भारत जैसा देश अपने समक्ष उत्पन्न चुनौतियों से लड़ने में तभी सक्षम हो सकता है जब सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ा जाए। यही सकारात्मक सोच चुनौतियों से पार पाने की प्रेरणा प्रदान करती है।

खैर, पिछले माह हमने अपने राज्य में बहोत सारे बदलाव देखें| चुनावी शोरगुल थमा और प्रजा ने अपना वोट डाला| दिव्यांगो ने वोट डालने में जो उत्साह दिखाया उनकी खुद प्रधानमंत्री ने भी सराहना की| गुजरात मे चुनाव हुए और एक नयी सरकार का गठन हुआ| प्रजा ने फिर से सरकार को अनेक नई आशाओं के साथ जिम्मेदारी की डोर थामने के लिए और सुशासन हेतु चुना है| आशा और कर्म के संयोग के सफलता को मिलते चलें|

नया साल आपके लिए शुभ और मंगलकारी हो|

"नव नभ के, नव विहग वृन्द को, नव पर, नव स्वर दे।"

-महाप्राण नीलकंठ 'निराला'

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जनवरी : 2018, पृष्ठ संख्या : 16,
वर्ष : 02, अंक : 1

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

ई-72, आयोजन नगर सोसायटी,

श्रेयस क्रोसिंग के पास, वासणा,

अहमदाबाद-380007

मो. 99749 55365,

99749 55125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बजार, अहमदावाद-6

दिव्यांग बच्चों को पढ़ाने के लिए चाहिए 4 लाख टीचर, मौजूद हैं केवल 90 हजार

पूरे देश में दिव्यांग बच्चो को शिक्षा देने के लिए शिक्षको की भारी कमी चल रही है| भारत सरकार में दिव्यांग मुख्य आयुक्त कमलेश कुमार पांडे का कहना है कि देश की कुल आबादी में 02 करोड़ 68 लाख की आबादी दिव्यांगो की है|

इनमें से केवल 50 लाख दिव्यांगो के पास ही दिव्यांग प्रमाण पत्र उपलब्ध हैं और शिक्षा देने के लिए करीब चार लाख स्पेशल एजुकेटर के सापेक्ष महज 90 हजार एजुकेटर ही फील्ड में काम कर रहे हैं|

हालांकि, आरसीआई में डेढ़ लाख के करीब एजुकेटर रजिस्ट्रेड हैं| पांडे ने बताया कि दिव्यांगो के रोजगार पाने के लिए आरपीड़ी एक्ट भी बनाया गया है|

‘महिलाएं अकेले हज पर जा सकती हैं’

प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम में यह बताया कि, कैसे पुरुष-संरक्षक के बिना मुस्लिम महिलाएं हज तीर्थयात्रा पर आगे बढ़ सकती हैं| जिसके लिए हज समिति ने दिशानिर्देशों को संशोधित किया था और करीब 1,300 महिलाओं ने इसके लिए आवेदन किया था।

यह कुछ दिनों के बाद आया था, विकलांगों के अधिकार के लिए राष्ट्रीय मंच के अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी को लिखा है कि हज यात्रियों के लिए सरकार के दिशानिर्देशों से कई प्रावधान डिफरेंटली एबल्ड लोगों को वार्षिक तीर्थयात्रा करने से रोकते हैं।

इनके चलते हज समिति द्वारा जारी दिशानिर्देशों में उल्लेख किया गया है कि, कोई भी भारतीय नागरिक जो मुस्लिम है, तीर्थयात्रा के लिए आवेदन कर सकता है, जिनके पास तीर्थयात्रा करने के लिए मानसिक या शारीरिक स्वास्थ्य नहीं है, जिनके पैर नहीं है ऐसे अपंग व्यक्ति, विकलांग, पागल, या अन्यथा शारीरिक रूप से या मानसिक रूप से अक्षम व्यक्ति हज के लिए आवेदन कर सकता है|

नए जोड़े गए प्रकार में मानसिक बीमारी, आत्मकेंद्रित, स्पेक्ट्रम विकार, सेरेब्रल पाल्सी, पेशीय रोग, क्रोनिक न्यूरोलॉजिकल परिस्थितियां, विशिष्ट सीखने की अक्षमता, एकाधिक स्क्लेरोसिस, भाषण और भाषा विकलांगता शामिल हैं।

डिफरेंटली एबल्ड लोगों के लिए खाद्यान्नों का घर-वितरण

नाशिक जिला प्रशासन ने खाद्यान्न सुरक्षा अधिनियम के तहत घर के लिए अलग-अलग लाभार्थियों को भोजन देने के लिए एक विशेष कार्यक्रम शुरू किया है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के तहत उचित मूल्य की दुकान (एफपीएस) से उठाए गए अनाज को दिव्यांग लोगों के परिवार को दिया जाने वाला अनाज घर पर डिलीवर किया जाएगा और इस गतिविधि के लिए एफपीएस को जिम्मेदारी दी गई है।

ऐसे मामलों में जहां विकलांग अपना सामान खरीदने के लिए एफपीएस तक नहीं पहुंच पा रहे हैं, इसलिए कभी-कभी वे इसे नहीं लेते हैं। इसलिए प्रशासन ने यह सुनिश्चित करने का निर्णय लिया है कि इन लोगों को उनके स्थान पर वितरण मिलता रहे और इसलिए सिस्टम डेवलप की जाए|

“एफपीएस को उन अधिकारियों की सूची तैयार करने के लिए कहा गया है ताकि वे अपने अधिकार क्षेत्र में काम कर सकें। हर महीने जब स्टॉक आता है, तो वे लोगों को प्राथमिकता के आधार पर ऐसे लोगों के परिवारों को देने होंगे,” अधिकारी आपूर्ति कार्यालयने कहा।

उन्होंने यह भी बताया कि अनाज को केवल सामाजिक संगठनों और गांवों के नागरिकों की उपस्थिति में ही लाभार्थी को दिया जाना चाहिए ताकि कोई भी इस मुद्दे पर सरकार को धोखा देने का प्रयास न करे।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

प.पू. ॐऋषि के आशीर्वाद से दिनांक २०/१२/२०१७ के रोज St. Joseph Mental Hospital गांधीधाम में 'ॐकार सेवादल कच्छ' द्वारा भोजन आदि सेवाकीय प्रवृत्ति का आयोजन किया गया था| इस अवसर की कुछ विशेष झलकियाँ...

वॉइस फॉर
दिव्यांग

कभी खुद को बोझ समझते थे ये दिव्यांग, अब चलाते हैं एसी कंपनी

कुछ दिव्यांगों ने अपनी मेहनत और लगन की दम पर एक शानदार मिसाल पेश की है। दरअसल, यहां के 11 दिव्यांगों ने मिलकर अंश लघु कृषक उत्पादक लिमिटेड नामक कंपनी की स्थापना की है। जिसमें उन्होंने अपने साथ 450 किसानों को भी जोड़ लिया है। यह जैविक कृषि को आधार बनाकर कृषि उत्पाद तैयार करते हैं। जहां से उत्पाद, आटा, मसाले, चावल को सुव्यवस्थित पैकेजिंग के बाद बाजार में उतार दिया जाता है। जैविक खेती के माध्यम से ये दिव्यांग जहां एक तरफ आर्थिक मजबूती पा रहे हैं। वहीं, इनको देख कर जिले के अन्य किसान अब जैविक खेती की तरफ अपना रूख करने लगे हैं।

दिव्यांग महिलाएं भी करती है काम...

ये दिव्यांग भले ही शारीरिक रूप से सामान्य न हों लेकिन इनकी इच्छाशक्ति ने समाज के अन्य लोगों को प्रेरणा देने का काम किया है। इनके साथ दिव्यांग महिलाएं भी काम कर रही हैं। इन 11 दिव्यांगों ने मिलकर जैविक खेती शुरू की और आज इनके उत्पाद की मांग जोरों पर है।

इन उत्पादों में गेंहूं, धान, हल्दी और धनिया समेत अन्य मसाले शामिल हैं। फसली उत्पादों की कीमत अन्य रासायनिक खादों की अपेक्षा ज्यादा होने के नाते इनका मुनाफा भी ज्यादा हो रहा है।

यह लोग प्राकृतिक खेती के साथ-साथ मानव स्वास्थ्य के लिए जागृत बनते जा रहे हैं।

अब चलाते है घर खर्च

दिव्यांग रामप्रीत ने बताया कि यहां पर 11 लोग काम करते हैं। सब दिव्यांग है, जैविक खेती से उत्पन्न चावल, गेहूं, धनिया, हल्दी मसालो की पिसाई करने के बाद पैकिंग किया जाता है। फिर उसे मार्केट में बेचा जाता है।

इससे हम बहुत खुश हैं। पहले हम कुछ काम नहीं कर पाते थे और आज 400 से 500 रुपए कमाकर अपने परिवार का खर्चा भी चला लेते हैं। अब हमारे साथ किसान भी जुड़े हुए हैं।

हम अपने को बोझ समझते थे

वहीं, दिव्यांग संजय का कहना है कि पहले हम घर पर रहकर कुछ नहीं कर पाते थे। कुछ लोग हमारे पास आए और जैविक खेती के बारे में बताया। उसके बाद हम गांव से धान, हल्दी, धनिया, गेहूं, और मसाला खरीद कर लाए और साफ सुथरा करके उसे मार्केट में बेचा। जिसका रिस्पांस हमें बहुत अच्छा मिला।

हमें जैविक खेती से फायदा मिल रहा है। इससे लोगों को बीमारियां नहीं होती और यह शुद्ध होता है। जैविक खेतीवाले सामान को मार्केट में हम 2 रुपए महंगा भी बेचते हैं। हमारे पास इस समय बहुत अच्छा ऑर्डर भी आया है। लोगों को हमारा समान पसंद भी आ रहा है। इसे हम और बड़ा करने की सोच रहे हैं। इससे पहले हम अपने को बोझ समझते थे, लेकिन अब हमें एक मुकाम मिल गया है जिससे हमें और बढ़ाना है।

जॉन नैश अद्वितीय गणितज्ञ

अक्सर लोगों में गणित को लेकर भय होता है। लेकिन यदि हम गहराई से विचार करेंगे तो पाएंगे कि हमारे चारों ओर कहीं न कहीं गणित विद्यमान है। बाजार जाने पर चीजों को खरीदने के लिए माप-तोल से लेकर मोल-भाव करने तक में गणित छिपा होता है। विभिन्न वस्तुओं के आकार और आकृति कहीं न कहीं गणित से संबंध रखती है।

हमारा देश गणितीय विरासत से संपन्न देश है। संख्या 'शून्य' एवं दशमलव पद्धति की खोज गणित क्षेत्र में भारत का महत्वपूर्ण योगदान है जिससे आगे चलकर संख्याओं को लिखने का तरीका विकसित हुआ। प्राचीन भारत की गणितीय योग्यता की जानकारी उस समय के ग्रंथों में मिलती हैं। आर्यभट्ट, भास्कर, वराहमिहिर जैसे अनेक प्राचीन विद्वानों ने गणित में अहम योगदान दिया। आधुनिक काल में रामानुजन एवं हरीशचंद्र ने गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। असल में श्रीनिवास रामानुजन 20वीं शताब्दी के महान गणितज्ञों में से एक हैं। गणित में उनके योगदान को देखते हुए भारत सरकार उनके जन्मदिन को 'राष्ट्रीय गणित वर्ष' के रूप में मनाने लगी है।

ऐसे ही एक असाधारण प्रतिभा के गणितज्ञ नील्स हेनरिक एबेल (1802-1829) हुए हैं जिन्होंने अपनी अल्पआयु में ही गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके कार्यों की स्मृति में गणित के नोबल पुरस्कार कहलाने वाले 'एबेल पुरस्कारों' (Abel Prize) की स्थापना की गई है। द नार्वेजियन एकेदमी ऑफ साइंस एंड लैटर्स (Norwegian Academy of Sciences and Letters) ने 2015 के एबेल पुरस्कार से दो अमेरिकी गणितज्ञों जॉन एफ. नैश जूनियर (John Forbes Nash, Jr.) और लुई निरनबर्ग (Louis Nirenberg) को सम्मानित किया है। इस लेख में हम इन दोनों गणितज्ञों के कार्यों को समझने का प्रयास करते हैं।

एबेल पुरस्कार से सम्मानित गणितज्ञ - जॉन नैश

जॉन फोर्ब्स नैश जूनियर का जन्म संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिम वर्जीनिया स्थित शहर ब्लूफील्ड में 13 जून, 1928 को हुआ था। उनके पिता एक विद्युत इंजीनियर और उसकी माँ एक शिक्षिका थीं। जॉन नैश ने पिट्सबर्ग में कार्नेगी प्रौद्योगिकी संस्थान में आरंभ में एक पूर्ण छात्रवृत्ति के साथ रसायनिक अभियांत्रिकी का अध्ययन

किया, लेकिन बाद में वह रसायन विज्ञान की ओर प्रेरित हुए। रसायन विज्ञान से भी उनका मन भटका और अंत में उन्होंने गणित का अध्ययन आरंभ किया।

इसके साथ ही नैश ने वैकल्पिक कोर्स के रूप में अर्थशास्त्र की पढ़ाई भी की। अर्थशास्त्र के इस अध्ययन के आधार पर ही उन्होंने प्रिंसटन विश्वविद्यालय में एक स्नातक छात्र के रूप में अपने पहले शोधपत्र 'सौदेबाज़ी की समस्या' का विचार सूझा। इस शोधपत्र से उनमें खेल सिद्धांत यानी निर्णय लेने के गणित संबंधी क्षेत्र के प्रति रुचि जाग्रत हुई।

नैश का पीएच.डी. शोधग्रंथ खेल सिद्धांत के मूलभूत ग्रंथों में से एक है। उन्होंने इस क्षेत्र में 'नैश संतुलन' (Nash balance) की अवधारणा का विकास किया, जिसका अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान में गहरा प्रभाव माना जाता है। प्रिंसटन में नैश ने शुद्ध गणित के क्षेत्र में पहली महत्वपूर्ण खोज की। उनके अनुसार यह प्रतिलिपि और वास्तविक बीजगणितीय असमरूपता से संबंधित एक सुंदर खोज थी। उनके साथियों द्वारा इस परिणाम को पहले से ही एक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्य के रूप में देखा जा रहा था।

सन् 1950 में नैश ने आंशिक अवकल समीकरण के बारे में महत्वपूर्ण प्रमेयों को साबित किया। 'एसे ऑन गेम थ्यौरी' (Essays on Game Theory) उनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। गणित के अलावा नैश को उनके खेल-सिद्धांत पर लिखे शोधपत्र, निर्णय-लेने के गणित के बारे में जाना जाता है। उन्हें अर्थशास्त्र में दिये गये योगदान के लिए सन 1994 का नोबेल पुरस्कार भी मिला।

खेल सिद्धांत की महत्वपूर्ण खोज करने वाले महान गणितज्ञ ने अपनी एक दर्दनाक और दुखद यात्रा के बाद अंत में अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार जीता। जिसे सन् 2001 में हॉलीवुड की एक फिल्म 'ए ब्यूटिफुल माइंड' (A Beautiful Mind) में जोरदार ढंग से फिल्माया गया है। 'ए ब्यूटिफुल माइंड' फिल्म महान गणितज्ञ जॉन एफ नैश जूनियर के कार्यों और जीवन पर थी, जिन्होंने सन् 1994 में अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार खेल-सिद्धांत के अन्य दो प्रसिद्ध सिद्धान्तकारों के साथ साझा किया था। हाल ही में उनका नाम वर्ष 2015 के एबेल सम्मान के लिए घोषित किया गया।

असल में द नार्वेजियन एकेदमी ऑफ साइंस एंड लैटर्स ने 2015 के 'एबेल पुरस्कार' के लिए दो अमेरिकी गणितज्ञों जॉन एफ नैश जूनियर और लुई निरनबर्ग को अरेखिए आंशिक अवकल समीकरणों और ज्यामितीय विश्लेषण में उनके असाधारण एवं मौलिक योगदान के लिए अपने आवेदन पत्र के सिद्धांत के मौलिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस प्रकार जॉन नैश ने गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर गणित को व्यवहारिक समस्याओं के निराकरण का माध्यम बनाने में भी महत्वपूर्ण कोशिश की।

नोबेल फाउंडेशन की वेबसाइट के लिए लिखी आत्मकथा में नैश ने कहा था कि मतिभ्रम के चलते उन्हें मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलोजी के फैकल्टी सदस्य पद से इस्तीफा देना पड़ा था। बाद में वह द प्रिंसीटन गए। प्रिंसीटन यूनिवर्सिटी और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी (एमआईटी) के गणितज्ञ को गेम थ्योरी के लिए जाना जाता है जिसने उन्हें 1994 में नोबेल पुरस्कार दिलाया था।

मनोविदलता स्किज़ोफ्रेनिया)

मनोविदलता एक मानसिक विकार है। इसकी विशेषताएँ हैं- असामान्य सामाजिक व्यवहार तथा वास्तविक को पहचान पाने में असमर्थता।

मनोविदलता एक मानसिक विकार है। इसकी विशेषताएँ हैं- असामान्य सामाजिक व्यवहार तथा वास्तविक को पहचान पाने में असमर्थता। लगभग 1% लोगो में यह विकार पाया जाता है। इस रोग में रोगी के विचार, संवेग तथा व्यवहार में आसामान्य बदलाव आ जाते हैं जिनके कारण वह कुछ समय लिए अपनी जिम्मेदारियों तथा अपनी देखभाल करने में असमर्थ हो जाता है। 'मनोविदलता' और 'स्किज़ोफ्रेनिया' दोनों का शाब्दिक अर्थ है - 'मन का टूटना'।

स्किज़ोफ्रेनिया के कुछ प्रमुख लक्षण हैं, जैसे कि शुरूआत में

- रोगी अकेला रहने लगता है।
- वह अपनी जिम्मेदारियों तथा जरूरतों का ध्यान नहीं रख पाता।
- रोगी अक्सर खुद ही मुस्कुराता या बुदबुदाता दिखाई देता है।
- रोगी को विभिन्न प्रकार के अनुभव हो सकते हैं जैसे की कुछ ऐसी आवाजे सुनाई देना जो अन्य लोगों को न सुनाई दें, कुछ ऐसी वस्तुएँ, लोग या आकृतियाँ दिखाई देना जो औरों को न दिखाई दे, या शरीर पर कुछ न होते हुए भी सरसराहट या दबाव महसूस होना, आदि।

वॉइस टू
दिव्यांग

- रोगी को ऐसा विश्वास होने लगता है कि लोग उसके बारे में बातें करते है, उसके खिलाफ हो गए हैं या उसके खिलाफ कोई षड्यंत्र रच रहे हों।
- लोग उसे नुकसान पहुँचाना चाहते हों या फिर उसका भगवान् से कोई सम्बन्ध हो, आदि।
- रोगी को लग सकता है कि कोई बाहरी ताकत उसके विचारों को नियंत्रित कर रही है या उसके विचार उसके अपने नहीं हैं।
- रोगी असामान्य रूप से अपने आप में हँसने, रोने या अप्रासंगिक बातें करने लगता है।
- रोगी अपनी देखभाल व जरूरतों को नहीं समझ पाता।
- रोगी कभी-कभी बेवजह स्वयं या किसी और को चोट भी पहुँचा सकता है।
- रोगी की नींद व अन्य शारीरिक जरूरतें भी बिगड़ सकती हैं।

रोगी की सहायता

यदि आपको लगे की किसी व्यक्ति में यह लक्षण हैं तो :-

- रोगी के व्यवहार में आए बदलाव देख कर घबरायें नहीं।
- याद रखे की अन्य बीमारियों की ही तरह यह भी एक बीमारी है जिसे मनोचिकित्सक की सही सलाह से ठीक किया जा सकता है।
- अपना समय किसी झाड़-फूंक में व्यर्थ ना करें, यह एक मानसिक बीमारी है जिसका चिकित्सकीय निदान सम्भव है।
- व्यवहारिक बदलाव इस बीमारी के लक्षण हैं न कि रोगी के चरित्र की खराबी।
- उसे सही-गलत का ज्ञान देने की कोशिश न करे क्योंकि मरीज़ आपकी बातें समझ पाने की अवस्था में नहीं है।
- यह बदलाव कुछ समय के लिए व्यक्ति के व्यवहार को असामान्य बना सकतें हैं एवं बीमारी के ठीक होने के साथ ही व्यक्ति का व्यवहार फिर से सामान्य हो जाता है।

- उसकी तथा दूसरों की सूरक्षा का ध्यान रखें।
- उसे तुरन्त मनोचिकित्सक के पास ले जाएँ।
- रोगी को नशा न करने दें।
- रोगी के आस-पास का वातावरण तनाव मुक्त रखने की कोशिश करें।
- रोगी के साथ साथ स्नेह पूर्वक व्यवहार करें।
- रोगी को मारें या बांधे नहीं बल्कि मनोचिकित्सक की मदद से उसे दवाई देकर शांत करने की कोशिश करें।

इस विकार का 'स्किज़ोफ्रेनिया' नाम युजेन ब्लेयुलेर के द्वारा दिया गया था।

मानकीकृत मानदंड

स्किजोफ्रेनिया का निदान करने का सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया गया मानदंड अमेरिकी मनोचिक्त्सीय एसोसिएशन (American Psychiatric Association) के डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ़ मेंटल डिसऑर्डर्स, संस्करण DSM-IV-TR और विश्व स्वास्थ्य

संगठन के रोगों और संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं के अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकी वर्गीकरण, ICD-10 से प्राप्त होता है। बाद के मानदंड विशेष रूप से यूरोपीय देशों में प्रयुक्त होते हैं जबकि DSM मानदंड संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया के बाकी हिस्सों में प्रयुक्त किये जाते हैं और साथ ही वे अनुसंधान संबंधी अध्ययनों में प्रचलित हैं। ICD-10 मानदंड श्नेडेरियन के प्रथम-श्रेणी के लक्षणों पर जोर देते हैं, यद्यपि, व्यवहार में, दो व्यवस्थाओं में तालमेल बहुत अधिक है।

डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ़ मेंटल डिसऑर्डर्स (DSM-IV-TR) के चतुर्थ संस्करण के अनुसार, स्किज़ोफ्रेनिया का निदान करने के लिए, तीन नैदानिक मानदंड पूरे किये जाने चाहिए:

विशिष्ट लक्षण : निम्नलिखित में से दो या अधिक, एक महीने की अवधि (या कम, यदि लक्षण इलाज के द्वारा कम हो जाते हैं) में प्रत्येक अधिकांश समय तक उपस्थित रहता है।.

- मिथ्या भ्रम
- विभ्रम
- अव्यवस्थित भाषण, जो औपचारिक सोच-शक्ति में विकार की एक अभिव्यक्ति है।
- बहुत अधिक अव्यवस्थित व्यवहार (अनुचित ढंग से पोशाक पहनना, अक्सर चिल्लाना) या कैटाटोनिक (catatonic) व्यवहार

नकारात्मक लक्षण: कुंठित करने वाले प्रभाव (भावनात्मक प्रतिक्रिया का अभाव या कमी), वाक् अवरोध (भाषा का अभाव या कमी), इच्छा शक्ति की कमी (प्रेरणा का अभाव या कमी) यदि मिथ्या भ्रम को विचित्र समझा जाता है, या विभ्रम मरीजों की क्रियाओं के चल विवरण में भाग लेने वाले एक आवाज का सुनाई देना या एक दूसरे से बातचीत करते हुए दो या अधिक आवाज शामिल होते हैं, तो ऊपर में केवल उस लक्षण की आवश्यकता होती है। भाषा अव्यवस्था की कसौटी तभी पूरी होती है यदि संवाद को काफी हद तक बिगाड़ना बहुत कठिन होता है।

सामाजिक/व्यवसायिक शिथिलता: अशांति के हमले के समय से ही, एक बड़े समय के लिए, कार्य के एक या अधिक क्षेत्र जैसे कि कार्य, व्यक्ति के पारस्परिक संबंध, या स्वयं की देखभाल, हमले के पहले प्राप्त स्तर से स्पष्ट रूप से कम होते हैं।

अवधि : अशांति का सतत संकेत कम से कम छह महीने तक कायम रहता है। छह महीने की अवधि में कम से कम एक महीने के लक्षण (या कम, यदि लक्षण इलाज से कम हो जाता है) शामिल होने चाहिए।

यदि मानसिक स्थिति या व्यापक विकासात्मक विकार के लक्षण उपस्थित रहते हैं, या लक्षण किसी सामान्य चिकित्सा स्थिति या किसी पदार्थ के प्रत्यक्ष परिणाम होते है, जैसे कि मद्यपान या उसकी औषधि तो स्किज़ोफ्रेनिया का निदान नहीं किया जा सकता है।

इस क्षति पर आईकॉनिक सांस्कृतिक चित्रण

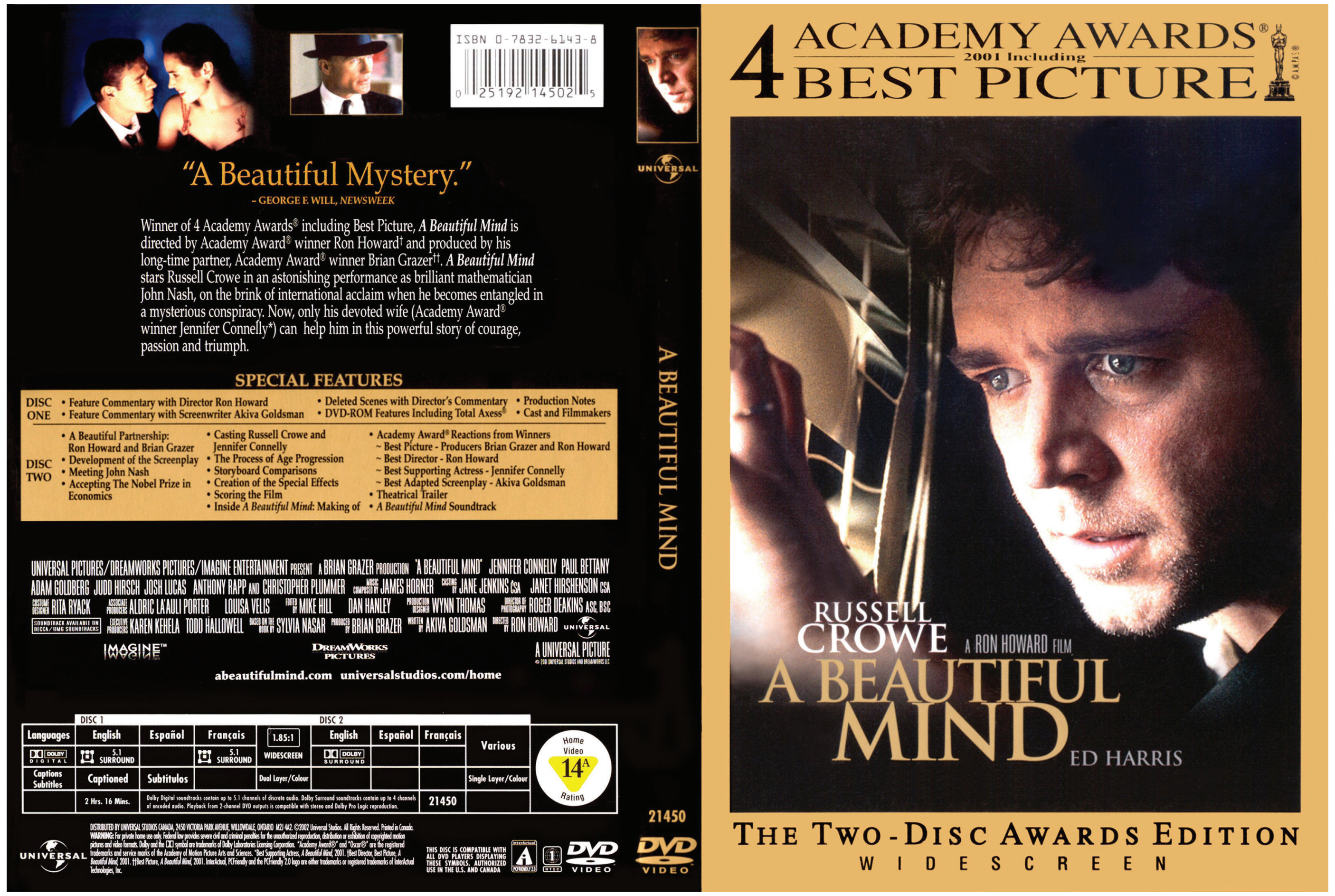

A Beautiful Mind नामक पुस्तक व फिल्म ने नोबल पुरस्कार विजेता गणितज्ञ जॉन फोर्ब्स नैश के जीवन को लिपिबद्ध किया जिनका इलाज स्किज़ोफ्रेनिया के लिए किया गया।

मराठी फिल्म देवराज (जिसमें अतुल कुलकर्णी ने अभिनय किया) स्किज़ोफ्रेनिया से प्रभावित एक मरीज के बारे में एक प्रस्तुति है। यह फिल्म, जिसे पश्चिमी भारत में तैयार किया गया है, मरीज व उसके प्रियजनों के व्यवहार, मानसिकता व संघर्ष अन्य पुस्तकें परिवारजनों के द्वारा संबंधियों के विषय में द्वारा लिखी गई हैं, ऑस्ट्रेलिया के पत्रकार एनी डेविसन ने टेल मी आई एम हियर (Tell me I'm Here) में अपने पुत्र के स्किज़ोफ्रेनिया से संघर्ष की कहानी लिखी है| जिसके ऊपर बाद में एक फिल्म भी तैयार की गई।

बुल्गाकोव की कृति The Master and Margarita कवि इवान बेज्डोमन्यिज को दुष्टात्मा (वोलैन्ड) से मुलाकात के बाद स्किज़ोफ्रेनिया से प्रभावित पाया जाता है जो कि बर्लियोज की मृत्यु का अनुमान होता है।

इडन एक्सप्रेस नामक पुस्तक, जो कि मार्क वॉनेगट द्वारा लिखी गई है, उसमें उनका स्वयं का सिज़ोफ्रेनिया से संघर्ष व स्वास्थ्य लाभ की गाथा है।

दिव्यांग के प्रति प्यार को लेकर

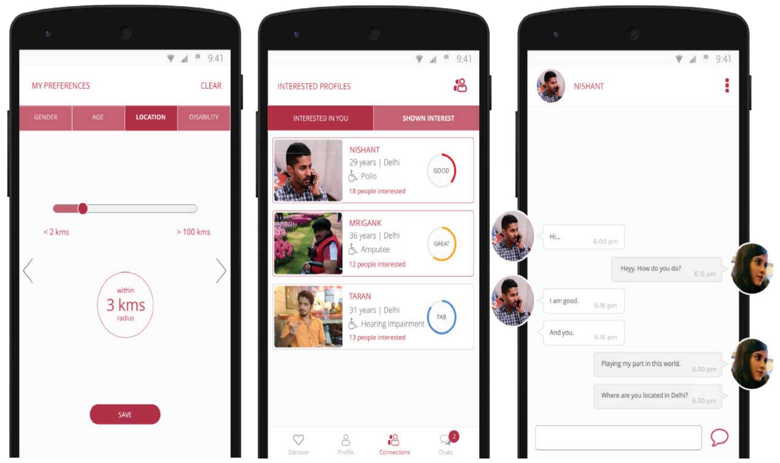

शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति अपने आत्मिक मिलन को हमेशा तडपते है| यह आइडिया उनके लिए है, जो उनको अपना प्यार और साथी चुनने में मदद करेगा|

लोग कहते हैं कि जोडियाँ स्वर्ग में बनती है, लेकिन विकलांग लोगों के लिए, कभी-कभी जोड़ी भी बनानी पड़ती है। शंकर श्रीनिवासन और कल्याणी खोना की दिमागी उपज, इनक्लोव (Inclov) एक ऐसा ऐप है जो दिव्यांग लोगों को प्रेम करने में मदद करता है।

शंकर ने कहा, "हम जोडियाँ बनाने के बारें में कुछ करना चाहते थे, लेकिन नियमित सेट अप के साथ नहीं करना चाहते थे," उन्होंने कहा कि मुंबई में उनकी पढ़ाई पूरी हुई और अक्सर मुलाकात के लिए बेंगलुरु का दौरा किया। एक आदर्श जोड़ी खोजने के लिए समाज को समान अवसर देने के लिए चाहते हैं, ये दोनों शारीरिक विकलांग लोगों को रिश्ते, दोस्ती और कुछ मामलों में शादी करने में भी मदद करता है।

एक ऑफ़लाइन एजेंसी के रूप में 2014 में शुरू होकर, Inclov एक ऑनलाइन मंच बन गया, जो वर्तमान में भौतिक विकलांग लोगों पर ध्यान केंद्रित करते हुए दुनिया का पहला दिव्यांग के लिए जोड़ी बनानेवाला ऐप होने का दावा करता है। कल्याणी के साथ हाथ मिलाने से पहले, शंकर एक ऐसी कंपनी का हिस्सा थे, जो शिक्षा पर केंद्रित थी।

सामाजिक पक्ष

आगे बताते हुए उन्होंने कहा कि, "ऐप डाउनलोड हो जाने के बाद, कोई प्रोफ़ाइल बना सकता है| ऐप ने विकलांगता के बारे में भी जानकारी मांगी है। अक्सर, इन मापदंडों के आधार पर एक जोड़ बनाया जाता है एक बार मैच बना दिया जाए तो वह ऐप पर बातचीत शुरू कर सकता है और इसे आगे बढ़ाने का काम व्यक्ति पर निर्भर है, "।

प्रभाव

"ऐप जनवरी 2016 में लॉन्च किया गया था, और वर्तमान में हमारे पास देश भर में 30,000 लोग हैं जो इस मंच पर पंजीकृत हैं। इसके अलावा, हमने लगभग 7,500 जोड़ियों का पता लगाया है, "शंकर कहते हैं, जो फुटबॉल के शौकीन हैं और खेल खेलना पसंद करते हैं, इसे देख रहे हैं और उनके पसंदीदा क्लब हैं।

विकलांगता अभी भी निषिद्ध है और इसलिए बहुत से लोग आगे की तलाश में संकोच करते हैं। उनका मानना है कि वे इस वजह से एक साथी या मैच या उससे मिलने-जुलने के लिए सोचा था। फिटनेस शौकीन भी मन की आराधना का आस्तिक है और जब भी वह कर सकता है तब भी मन पर ध्यान देने के लिए समय लगता है। "ऐप के माध्यम से लोग विकलांग के बारे में बात करने में और अधिक खुले हुए हैं पारदर्शिता का कोई मुद्दा नहीं है और बहुत से लोग अपनी विकलांगता के बारे में बातचीत कर सकते हैं। "

भविष्य उज्जवल है

पिछले दो सालों में, ऐप में 30 से अधिक मुलाकातें हुई थीं और आने वाले वर्ष 2018 में, वे पूरे देश में कुल 50 मीट अप मिलने की अपेक्षा करते थे। वे ऐप को और अधिक सुलभ बनाना चाहते हैं, हालांकि आज की दृष्टि से दृष्टिहीन समुदाय के लिए यह पूरी तरह से पहुंच योग्य है।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

अनूरा स्कूल द्वारा आयोजित वार्षिक महोत्सव के अवसर पर प.पू. ॐऋषि मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे थे| और दिव्यांग बच्चों द्वारा अपनी बुद्धि व समज सामर्थ्य द्वारा प्रदर्शित किए गए प्रदर्शनी की विशेष झलकियाँ...

दिव्यांगो के लिए स्माइल यर

**दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक ॐकार,
फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से क्रिस्टल डेन्टल केर
(डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल) दिव्यांगो व शहीद सैनिकों के जरुरमंद
परिवारों के लिए नि:शुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है|**

KRYSTAL DENTAL CARE

DSD

DIGITAL SMILE DESIGN & IMPLANT CENTRE

180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol pump,
Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad-380015
Clinic: 079 48008004

DR. SHASHSVAT JAIN
+91 9978601890

MDS : Prosthodontics (Manipal)
PGCOI : Implant Specialist
DSD : Dental Smile Design

TIMINGS:
10:00 am to 8:00 pm

CONSULTANT PROSTHODONTIST & IMPLANTOLOGIST

- Maxillofacial Prosthetics
  Cancer Rehabilitation
  Trauma Rehabilitation
- Implant Rehabilitation
- Digital Smile Designing
- Full Mouth Rehabilitation
- Crowns & Veneers
- Full & partial Dentures

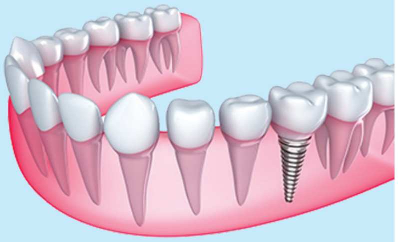

દાંતના તમામ દર્દોનું એકમાત્ર સમાધાન એટલે...
ક્રિસ્ટલ ડેન્ટલ કેર

Digital Smile Designing

Before

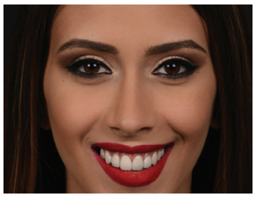

After

Crown Teatment

Implant Teatment

WHAT WE DO

- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns & veneers
- Prosthetic replacements (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG facility available
Pick up & Drop facility for senior citizens

Website : www.krystaldentalcare.com · E-mail : drs@krystaldentalcare.com